इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन (वाणिज्य और विज्ञान व्यवसाय के विशेष संदर्भ में)

संजीव कुमार शुक्ला*

इस शोध अध्ययन से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि क्या वर्ग विशेष के विद्यार्थियों की अभिरुचियाँ किसी दूसरे वर्ग विशेष के विद्यार्थी से भिन्न-भिन्न होती हैं। प्रत्येक बालक की रुचि, प्रवृत्ति, क्षमता, योग्यता भिन्न होती है। आज अधिकांश विद्यार्थियों के सामने शैक्षिक एवं व्यावसायिक समस्याएँ बनी रहती हैं, जिन्हें वे स्वयं नहीं सुलझा सकते। बालकों का सर्वांगीण विकास करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वे किस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं, बालकों की भावी सफलता में उनकी अभिरुचियों का काफ़ी सीमा तक योगदान रहता है। इन बातों का ध्यान रखते हुए शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के लिए इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों को चुना और शोध विषय के रूप में ''इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। इसके लिए शोधार्थी ने सीतापुर जनपद के हिंदी भाषा माध्यम के इंटरमीडिएट स्तर के सत्र 2015–16 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया तथा शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। इस शोध अध्ययन में इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचियों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए काई-वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि वाणिज्य के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों तथा पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है, जबकि सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर पाया गया। दूसरी ओर विज्ञान क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों; सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

"किसी राष्ट्र का धन व समृद्धि, औद्योगीकरण द्वारा उसके मानव तथा भौतिक साधनों के समुचित उपयोग पर निर्भर करता है। मनुष्य का औद्योगीकरण में उपयोग करने के लिए यह ज़रूरी है कि उसे विज्ञान की शिक्षा तथा तकनीकी कौशल का प्रशिक्षण दिया जाए। उद्योग द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिक संपन्नता की संभावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। भारत की

* *प्रवक्ता*, बी.एड. विभाग, श्री गांधी महाविद्यालय, सिधौली, सीतापुर, उत्तर प्रदेश 261 303

Chapter 7.indd 75 7/5/2018 11:12:01 AM

जनशक्ति का पर्याप्त साधन, शिक्षित तथा प्रशिक्षित होने पर ही आधुनिक संसार में उपयोगी संपत्ति बन सकता है।" आज के तकनीकी और वैज्ञानिक युग में आजीविका या रोटी की समस्या संपूर्ण मानव जाति के सामने है। इस समस्या के निराकरण हेतु व्यक्ति किसी न किसी प्रकार का रोज़गार (व्यवसाय) करता है। परंतु व्यक्ति को अपने व्यवसाय में पूर्णतः सफलता पाने के लिए उसका स्वयं का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है।

मुदालियर कमीशन (1952–53) ने विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता के विकास पर बल दिया है; उसके अनुसार माध्यमिक शिक्षा में औद्यौगिक एवं व्यावसायिक विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए। इन विषयों की शिक्षा से विद्यार्थियों और देश, दोनों का हित होगा। विद्यार्थी अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् किसी व्यवसाय को स्वतंत्र रूप से ग्रहण कर सकेंगे, अतः उनको नौकरी खोजने के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। देश का हित यह होगा कि उसे अपने विभिन्न उद्योगों एवं व्यवसायों के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति सरलता से मिल जाएँगे।

शिक्षा और रोज़गार प्रणाली पर कोठारी कमीशन (1964–66) ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कमीशन का विचार है कि — "मौजूदा शिक्षा प्रणाली में शिक्षा और रोज़गार के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। यही नहीं, शिक्षा प्रणाली द्वारा तैयार किए गए व्यक्तियों की संख्या तथा अपेक्षित जनशक्ति या नौकरी के अवसरों के बीच गहरा संबंध स्थापित करके शिक्षा तथा रोज़गार के मध्य परोक्ष संबंध स्थापित करने की कोशिश भी नहीं की गई है। कोठारी कमीशन ने व्यावहारिक रूप से ऐसा अनुभव किया कि शिक्षा और जीवन का आपसी तालमेल नहीं बैठ रहा है, अतः जीवन के लिए शिक्षा हो। विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम लागू करने का सुझाव दिया तथा कहा कि व्यावसायिक शिक्षा देने में विद्यार्थियों की रुचि तथा स्वभाव पर विशेष ध्यान दिया जाए, क्योंकि यदि उनकी अभिरुचि के अनुसार व्यवसाय से संबंधित शिक्षा मिलेगी तो सफलता की संभावना बढ़ सकती है।

रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विधा है। शारीरिक गठन, मानसिक योग्यता, स्वभाव, आचार-विचार, बुद्धि, अभिक्षमता, अभिवृत्तियाँ, विषयों, व्यक्तियों, वस्तुओं, क्रियाओं, व्यवसायों आदि के प्रति व्यक्तियों की रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। कोई भी व्यक्ति आई.ए.एस., डॉक्टर, वकील, अभियन्ता, अध्यापक, व्यवसायी तथा उद्यमी आदि बनना चाहता है। भिन्न-भिन्न विद्यार्थी को भिन्न-भिन्न विषय, जैसे — गणित, इतिहास, हिंदी, चित्रकला तथा विज्ञान आदि अच्छा लगता है। किसी व्यक्ति को अवकाश के समय में साहित्य पढ़ने का शौक होता है, किसी को आराम करने का मन होता है तथा किसी को वार्तालाप करने की इच्छा होती है। इस प्रकार के सभी अंतर रुचियों की विभिन्नताओं के कारण होते हैं। किसी कार्य में रुचि होने पर व्यक्ति उस कार्य को सरलता, शीघ्रता और मनोयोग से करता है तथा सफलता प्राप्त करता है। इसके विपरीत, रुचि के अभाव में व्यक्ति मन लगाकर कार्य नहीं करता है, परिणामतः प्रायः असफल हो जाता है। यही कारण है कि शैक्षिक एवं

व्यावसायिक निर्देशन व परामर्श में रुचियों का भी ध्यान रखा जाता है।

भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में शारीरिक, मानसिक, स्वभाव, अभिरुचि तथा योग्यता की दृष्टि से अंतर होता है। आज वैश्वीकरण, औद्योगीकरण एवं डिजिटल क्रांति के कारण व्यवसायों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। विविध प्रकार के व्यवसायों के लिए भिन्न-भिन्न योग्यता तथा क्षमता वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। इसलिए विभिन्न व्यवसायों के लिए उपयुक्त व्यक्तियों का चुनाव करने के लिए प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत योग्यता, क्षमता कौशलों तथा रुचि का अध्ययन भी आवश्यक है।

व्यवसायों की अधिकता के कारण विद्यार्थी यह समझ नहीं पाता है कि उसे कौन-सा व्यवसाय अपनाना चाहिए। अधिकांश विद्यार्थी अपने माता-पिता की उच्च आकांक्षा की पूर्ति के लिए उन विषयों का चुनाव कर लेते हैं, जिन व्यवसायों में उनकी रुचि नहीं होती है। वे विद्यार्थी अरुचिकर विषयों को लेकर एक ही कक्षा में दो-तीन साल तक फ़ेल होते रहते हैं, जिससे उन विद्यार्थी को तो निराशा का सामना करना ही पड़ता है, साथ-ही-साथ उनके माता-पिता भी दुःखी होते हैं। बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए यह जानना आवश्यक है कि बालक किस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। बालकों की भावी समस्या में उनकी अभिरुचियों का काफ़ी सीमा तक योगदान रहता है।

व्यावसायिक अभिरुचियों पर पूर्व में भी शोध अध्ययन किए जा चुके हैं, जैसे — जैन (1951) ने 'वोकेशनल इंट्रेस्ट ऑफ़ ह्यूमेन' अध्ययन द्वारा स्त्रियों की व्यावसायिक रुचियों को जानने का शोध अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि विभिन्न व्यवसायों में से किस व्यवसाय में स्त्रियों की रुचि अधिक है और किसमें कम है। इसके लिए इन्होंने रुचि के वस्तुनिष्ठ एवं निबंधात्मक परीक्षणों को अपनाया। परिणाम यह आया कि स्त्रियों में सबसे अधिक रुचि शिक्षण के क्षेत्र में थी और व्यवसायों के प्रति उनके विचार अनिश्चित थे। शर्मा (1955) ने विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों एवं चयन पर शोध अध्ययन किया। उन्होंने दिल्ली शहर और ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों के 250 विद्यार्थियों का चयन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि पारिवारिक वातावरण तथा पिता की इच्छा का विद्यार्थियों की रुचियों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

अभिलाषी (1957) ने पूर्व स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों पर शोध अध्ययन किया। उन्होंने राजस्थान के उदयपुर शहर के कला और विज्ञान के 250 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। शोध अध्ययन में पाया गया कि चार प्रतिशत विद्यार्थी व्यवसाय से परिचित थे तथा उन्हें पहले से उनका अनुभव था। अधिकांश विद्यार्थियों ने इंजीनियर, डॉक्टर तथा शिक्षक बनने की वरीयता दी। इस वरीयता के कारण का आधार विद्यार्थियों ने अपनी रुचि, देश की सेवा, माता-पिता की इच्छा आदि को बताया। एल, सिंध (1967) ने 'पैटर्न्स ऑफ़ एजुकेशन एंड वोकेशनल एंड इंट्रेस्ट ऑफ़ एडोलेसेंस' नामक शोध अध्ययन द्वारा किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन किया। शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था कि नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के किशोर लड़के और लड़कियों की शैक्षिक

और व्यावसायिक रुचियों के क्या आदर्श हैं? इस अध्ययन में उन्होंने नगर और गाँव में 500 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया। जिसमें उन्होंने नगर एवं गाँव के क्रमशः 125–125 लड़के और 125–125 लड़कियों को लिया। इस संबंध में उन्होंने सह-संबंध तथा इनकम रेंज टेस्ट का प्रयोग किया। इस शोध अध्ययन से पाया गया कि किशोर छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक और व्यावसायिक रुचियों के प्रति कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक व व्यावसायिक रुचि में भिन्नता है, नगर की छात्राओं की अन्य व्यवसायों में अधिक रुचि है। जबकि गाँव की छात्राएँ केवल घरेलू व्यवसाय करती हैं। दोनों ही छात्राओं में कृषि व्यवसाय के प्रति कम-से-कम रुचि है। सिन्हा और दास (1959) ने व्यावसायिक वरीयता में प्रेरणा तत्व पर शोध अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में पाया कि सामाजिक प्रतिष्ठा मुख्य कारक के रूप में तथा धन व्यय चयन में गौण कारक होता है।

उपरोक्त शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि अभी तक व्यावसायिक अभिरुचि पर तो शोध अध्ययन हुए हैं, परंतु इसमें इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचि का अध्ययन करने पर कोई शोध अध्ययन नहीं हुआ है। अतः इस रिक्तता की पूर्ति के लिए इस शोध अध्ययन की आवश्यकता प्रतीत होती है।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे —

1. वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
2. वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
3. वाणिज्य व्यवसाय में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
4. विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि का सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
5. विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि का सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
6. विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि का सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ थीं —

1. वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचियों में सार्थक अंतर नहीं है।
2. वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।
3. वाणिज्य व्यवसाय में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।
5. विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

6. विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। इसे वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के नाम से भी जाना जाता है।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद के हिंदी भाषा माध्यम के इंटरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया था। न्यादर्श के रूप में सामान्य, पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यात्मक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक वर्ग में 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया था। अतः न्यादर्श में तीनों वर्गों से मिलाकर कुल 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन में डी. एन. श्रीवास्तव और बी. पी. बंसल द्वारा निर्मित 'व्यावसायिक रुचि प्रपत्र' का प्रयोग किया गया था। श्रीवास्तव और बंसल द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि प्रपत्र में प्रारंभ में 176 पद थे। जिन्हें दो व्यावसायिक क्षेत्रों में बाँटा गया था। लेकिन बाद में इसमें 128 पदों को रखा गया और इन 128 पदों को दो व्यावसायिक क्षेत्रों में बाँटा गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 — वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए काई-वर्ग विधि का प्रयोग किया गया एवं प्राप्त परिणाम सारणी 1 में दिए गए हैं।

सारणी 1 में काई-वर्ग का प्राप्त मान 1.58 सारणी मान (.05 सार्थकता स्तर पर 9.488) से कम है। अतः यह सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। अतः यह कहा जाता है कि वाणिज्य के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 2 — वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण

सारणी 1 — वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में अंतर

विद्यार्थी	कम		औसत से कम		औसत		औसत से ऊपर		उच्च		योग	सार्थकता स्तर
	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	N	
सामान्य वर्ग	28	25	13	14	9	11	0	0	0	0	50	काई-वर्ग(χ^2)=1.58
पिछड़ा वर्ग	22	25	15	14	13	11	0	0	0	0	50	
योग	50		28		22		0		0		100	

सारणी 2 — वाणिज्य व्यवसाय में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में अंतर

विद्यार्थी	कम		औसत से कम		औसत		औसत से ऊपर		उच्च		योग	सार्थकता स्तर
	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	N	
सामान्य वर्ग	28	20	13	17.5	9	7.5	0	1	0	0	50	काई-वर्ग(χ^2)=15.50
अनुसूचित जाति	12	20	22	17.5	14	7.5	2	1	0	0	50	
योग	40		35		23		2		0		100	

करने के लिए काई-वर्ग विधि का प्रयोग किया गया एवं प्राप्त परिणाम सारणी 2 में दिए गए हैं।

सारणी 2 में काई-वर्ग का प्राप्त मान 15.50 सारणी मान (.05 सार्थकता स्तर पर 9.488) से अधिक है। अतः यह सार्थक है। इस सार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना को अस्वीकार किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वाणिज्य के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 3 — वाणिज्य व्यवसाय में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए काई-वर्ग विधि का प्रयोग किया गया एवं प्राप्त परिणाम सारणी 3 में दिए गए हैं।

सारणी 3 में काई-वर्ग का प्राप्त मान 4.30 सारणी मान (.05 सार्थकता स्तर पर 9.488) से कम है। अतः यह सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वाणिज्य व्यवसाय के क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 4 — विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण

सारणी 3 — वाणिज्य व्यवसाय में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में अंतर

विद्यार्थी	कम		औसत से कम		औसत		औसत से ऊपर		उच्च		योग	सार्थकता स्तर
	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	N	
पिछड़ा वर्ग	22	17	15	18.5	13	13.5	0	1	0	0	50	काई-वर्ग(χ^2)=4.30
अनुसूचित जाति	12	17	22	18.5	14	13.5	2	1	0	0	50	
योग	34		37		27		2		0		100	

करने के लिए काई-वर्ग विधि का प्रयोग किया गया एवं प्राप्त परिणाम सारणी 4 में दिए गए हैं।

सारणी 4 में काई-वर्ग का प्राप्त मान 2.78 सारणी मान (.05 सार्थकता स्तर पर 9.488) से कम है। अतः यह सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 5 — विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए काई-वर्ग विधि का प्रयोग किया गया एवं प्राप्त परिणाम सारणी 5 में दिए गए हैं।

सारणी 5 में काई-वर्ग का प्राप्त मान 6.58 सारणी मान (.05 सार्थकता स्तर पर 9.488) से कम है। अतः यह सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 6 — विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए काई-वर्ग विधि का प्रयोग किया गया एवं प्राप्त परिणाम सारणी 6 में दिए गए हैं।

सारणी 6 में काई-वर्ग का प्राप्त मान 3.38 सारणी मान (.05 सार्थकता स्तर पर 9.488) से कम

सारणी 4 — विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में अंतर

विद्यार्थी	कम		औसत से कम		औसत		औसत से ऊपर		उच्च		योग	सार्थकता स्तर
	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	N	
सामान्य वर्ग	7	7.5	23	21.5	12	15	6	4.5	2	1.5	50	काई-वर्ग(χ^2)=2.78
पिछड़ा वर्ग	8	7.5	20	21.5	18	15	3	4.5	1	1.5	50	
योग	15		43		30		9		3		100	

सारणी 5 — विज्ञान के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में अंतर

विद्यार्थी	कम		औसत से कम		औसत		औसत से ऊपर		उच्च		योग	सार्थकता स्तर
	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	N	
सामान्य वर्ग	7	6	23	18.5	12	1.8	6	5.5	2	2	50	काई-वर्ग(χ^2)=6.58
अनुसूचित जाति	5	6	14	18.5	24	1.8	5	5.5	2	2	50	
योग	12		37		36		11		4		100	

सारणी 6 — विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में अंतर

विद्यार्थी	कम		औसत से कम		औसत		औसत से ऊपर		उच्च		योग	सार्थकता स्तर
	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	f_o	f_e	N	
पिछड़ा वर्ग	6	6.5	20	17	18	21	3	4	1	1.5	50	काई-वर्ग(χ^2)=3.38
अनुसूचित जाति	5	6.5	14	17	24	21	5	4	2	1.5	50	
योग	13		34		42		8		3		100	

है। अतः यह सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए स्वतंत्र वितरण की परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा न केवल समाज, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र की उन्नति का मूल आधार मानी जाती है। राष्ट्र की उन्नति, व्यवसायों की उन्नति पर निर्भर करती है। विभिन्न प्रकार के व्यवसायों की उन्नति, सफल विद्यार्थियों पर निर्भर करती है। विद्यार्थी एक व्यवसाय में तभी सफल होगा, जबकि उस व्यवसाय के प्रति विद्यार्थी की भी रुचि हो।

इस शोध अध्ययन में इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से शिक्षक लाभान्वित होंगे, शिक्षक को विद्यार्थियों की रुचियों के बारे में पता होने पर वह विद्यार्थी की उन्नति के लिए उचित निर्देशन और परामर्श दे सकते हैं। विद्यार्थी की नकारात्मक रुचियों को सकारात्मक कार्य की ओर लगा सकते हैं। शिक्षक, विद्यार्थी की रुचियों को अन्य व्यवसाय के प्रति भी लगा सकते हैं। शिक्षक, विद्यार्थी की रुचियों को सही दिशानिर्देश देकर उसे सफल नागरिक बना सकते हैं।

विभिन्न व्यवसायों के प्रति अपने बालक की रुचियाँ जानने के पश्चात् अभिभावकों से अपने बालक को सही रूप में पहचानने में भूल नहीं होगी। अभिभावक को यह पता होगा कि बच्चा किस व्यवसाय में अधिक रुचि रखता है, जिससे कि वे अपनी आकांक्षा को छोड़कर बालक की उन्नति के विषय में अधिक सोच सकेंगे।

अपनी रुचियाँ जानने के पश्चात् विद्यार्थी स्वयं भी लाभान्वित होंगे। क्योंकि आज औद्योगीकरण के कारण व्यवसायों की संख्या बहुत अधिक हो गई है। विद्यार्थियों को स्वयं ही पता नहीं होता कि उनकी रुचि किस क्षेत्र में अधिक है, वे जाने-अनजाने में उस पाठ्यक्रम को पढ़ते रहते हैं, जिसमें उनकी रुचि नहीं होती है। रुचियाँ जानने के पश्चात् विद्यार्थी उस व्यवसाय को ही अपनाएँगे जिनमें उनकी अधिक रुचि होगी और उन्हें निराशा की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अतः स्पष्ट है कि यह शोध अध्ययन, शिक्षा के क्षेत्र में तथा निर्देशन के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दे सकता है। आज के इस युग में जब व्यवसायों के इतने अधिक क्षेत्र हैं, जहाँ बालक यह निर्णय लेने में असमर्थ होता है, वहाँ पर यह शोध अध्ययन उसकी सहायता कर सकता है। अतः इस शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे।

संदर्भ

कपिल, एच.के. 2004. *अनुसंधान विधियाँ*. एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा.

गुप्ता, एस.पी. और अलका गुप्ता. 2011. *साँख्यिकीय विधियाँ*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

त्यागी, रचना और धीरेन्द्र चिकारा. 2011. 'सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों में हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा की समझ और पढ़ने में रुचि — एक अध्ययन.' *मूल्य-अवमूल्यन*. वर्ष-1, अंक-3, अक्टूबर-2011, पृष्ठ-18 व 38. सारंग प्रकाशन, लखीमपुर-खीरी.

पाण्डेय, कुसुम. 1989. इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर छात्राओं में व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन. *अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध*. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

भटनागर, सुरेश. 2010. *कोठारी कमीशन और शैक्षिक परिवर्तन*. आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश.

राम प्यारे. 1985. स्टडी ऑफ़ वोकेशनल इंट्रेस्ट एंड इंटेलीजेंस ऑफ़ बी.एस-सी., बी.कॉम एंड बी.ए. ऑफ़ इलाहाबाद विश्वविद्यालय. *अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध*. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

राय, पारसनाथ. 1996. *अनुसंधान परिचय*. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, उत्तर प्रदेश.

सुखिया, एस.पी. पी.वी. मेहरोत्रा और आर.एन. मेहरोत्रा. 1990. *शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, उत्तर प्रदेश.

सिंह, अरुण कुमार. 2009. *शिक्षा मनोविज्ञान*. भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, बिहार.